© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN: 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

रामायण काल में कृषि परंपरा

Seema Punia, MA (Sanskrit literature), Mphil (Sanskrit), seemapunia2011@gmail.com

सारांश -

कृषि किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की नींव कही जाती है। हमारे देश के लिए कृषि उतनी ही आवश्यक है जितना जीवित रहने के लिए सांस लेना। कृषि हमारी आर्थिक व्यवस्था के लिए 'रीड की हड्डी' की तरह है। सामाजिक व्यवस्था में कृषि का उतना ही महत्व है, इस के नष्ट होने से सामाजिक व्यवहार भी नष्ट हो जाता है।

वैदिक काल से प्रारंभ हुई कृषि परंपरा पौराणिक काल, रामायण काल, महाभारत काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल में भी विद्यमान है समय के साथ-साथ कृषि करने के तरीकों में भी परिवर्तन आया है पौराणिक काल में भी आजीविका का प्रधान साधन कृषि ही था।

मूल शब्द – सुकृष्ट, कौसल, मुष्टि, लांगल, कर्षण

कृषि का इतिहास

कृषि कर्म का प्रारंभ ब्रह्मा के पौत्र तथा स्वायम्भुव मनु के पुत्र उत्तानपाद से दशमी पीढ़ी में उत्पन्न महाराज वैन्य प्रभु ने किया था। ऐसा माना गया है, उन्होंने अपने धनुष की कोटि से सैकड़ों सहस्त्रों पर्वतों को उखाड़कर समतल बनाया और भूमि को कृषि योग्य बनाया।

तत उत्सारयामास शैलान् षतसहस्त्रश : ।

धनुष्कोट्या तदा वैन्य स्तेन शैला विवर्द्धिता ।।[1]

रामायण में कृषि

रामायण काल में राजनीतिक दशा बिल्कुल शुद्ध अवस्था में थी और कृषक वर्ग आर्थिक रूप से काफी सक्रिय था। यह माना जाता था कि एक सुशासित राज्य की आर्थिक व्यवस्था का मूलाधार हो सकता है क्योंकि राजाहीन (सुशासित राज्य सहित) राज्यों में खेतों में बीज नहीं बोए जाते और कृषि-गौरक्षा आदि द्वारा जीवन-यापन करने वाले धनवान सुरक्षित नहीं रह सकते थे।[2] इस युग में कृषि के विकास के शास्त्रों का प्रादुर्भाव हुआ जिसे वार्ता था वित शास्त्र कहा जाता था।

रामायण युग में कृषि का महत्व इतना अधिक था कि कृषि-गोरक्षा जीवनम् कहा जाता था। जो व्यक्ति कृषि पर आश्रित होते थे, उन्हें धनी माना जाता था।

रामायण में कृष् धातु का प्रयोग खेत जोतने के अर्थ में किया गया है किंतु इस क्रिया में कृषि संबंधित सारी प्रक्रियाएं सम्मिलित की गई थी। महर्षि वाल्मीकि ने कृषि की अतिशयता को व्यंजित करने के लिए 'सुकृष्ट' शब्द का प्रयोग किया है दशरथ और राम के राज्य में कृषि अत्यंत विकसित थी और किसान सुखी एवं समृद्ध थे। भगवान श्री रामचंद्र ने कृषि के महत्व पर बल देते हुए इसे राष्ट्रीय संपत्ति की श्रेणी दी थी। कहीं-कहीं वनों में भी कृषि करने का उल्लेख मिलता है। इस युग के कोसल राज्य का वर्णन करते हुए महर्षि वाल्मीकि कहते हैं कि वह धन-धान्य और गायों से परिपूर्ण तथा तालाबों आम्रवनों और उद्यानों से परिपूर्ण था।[3] मागधी नदी हरे-भरे खेतों के बीच से बहती थी। भारत का दक्षिणी समुद्री-तट एक रमणीय वन-प्रदेश था, जहां जाति नामक सुगंधित फल, तमाल के पुष्प एवं मरीच की झाड़ियों की बहुलता थी। लंका की जलवायु समुद्री हवाओं से प्रभावित होने के कारण समशीतोष्ण थी, इसलिए लंका की भूमि पर्याप्त वर्षा के कारण काफी उपजाऊ थी।

रामायण युग में भूमि के प्रकार -

रामायण में भूमि को पांच भागों में बांटा गया था – 1. निवास भूमि, 2. कृषि भूमि, 3. गोचर भूमि, 4. वन प्रदेश, 5. इरिन। निवास भूमि को 'पुर' या 'राष्ट्र' कहते थे। कृषि वाली भूमि केदार कही जाती थी और गोचर भूमि (चारागाह) को शाद्वल कहते थे। बंजर भूमि वन प्रदेश के अंतर्गत थी। असर क्षेत्र इरिन कहलाता था।[4]
कृषि योग्य भूमि में खेतों के नाम फसल के नाम के आधार पर रखे जाते थे। जैसे ब्रीहि बोया जानेवाले खेत में 'ब्रैहेय' और जौ बोया जाने वाला खेत 'यव्य' कहलाता था। जो क्षेत्र धान के लिए उपयुक्त होता था उसे 'कलम' कहते थे।

रामायण युग में जुताई एवं बुवाई -

इस युग में कृषि के लिए अनुकूल भूमि तैयार की जाती थी जैसा कि आधुनिक काल में भी होता है। हल के द्वारा खेत जोता जाता था जिससे 'लांगल' कहते थे। विदेह के राजा जनक द्वारा लांगल से खेत जोतना और इसके पश्चात बीज बोना, इस बात को दर्शाता है कि खेत की तैयारी के बाद ही बीज बोया जाता था।
खेत जोतना को 'कर्षण' कहा जाता था। बुवाई के लिए मुष्टि में बीज लेकर बोया जाता था।[5] विक्षेप क्रिया (बीज छींटना अर्थात् फेंकना) से ही बीज बोया जाता था। आधुनिक काल में बोने की सबसे उत्तम एवं प्रचलित विधि 'बीज छींटना' (broadcasting) ही है जुती हुई भूमि को सीता कहा जाता था।

रामायण काल में सिंचाई व्यवस्था -

इस युग में के आधार पर खेतों को दो भागों में बांटा गया था -

1. नदी मातृक – वे खेत कहलाते थे जो नदी अर्थात् कृत्रिम साधनों द्वारा सींचे जाते थे।

2. देव मातृक - वे खेत जो वर्षा जल अर्थात् इंद्र देवता की कृपा पर निर्भर थे।

रामायण युग में खेतों की सिंचाई मुख्य रूप से वर्षा के जल द्वारा ही होती थी किंतु अनावृष्टि से बचने के लिए सिंचाई के साधनों का प्रयोग किया जाता था कोसल राज्य के खेत अदेवमातृक ही थे।[6] कोसल में तालाबों की अधिकता थी। गोमती नदी के किनारे अनेक जलीय स्थल थे जहां गायों का चरागाह था। मुख्य तौर पर जलाशय छोटे तालाब, नदियाँ एवं कुएं से सिंचाई का कार्य किया जाता था।

रामायण में कहा गया है कि यदि खेत में कोई क्यारी सुखी हो और उसके पास ही कोई दूसरी क्यारी जल से पूर्ण हो तो पहली क्यारी सन्निकटता के प्रभाव से अपने पौधों को सींच लेती है।

"केदारस्य केदार: सोदकस्य निरुदक:"[7]

रामायण काल की मुख्य फसलें -

इस युग में धान एक प्रमुख फसल मानी जाती थी। धान के खेत को 'कलम' कहा गया है। धान की फसल दो प्रकार की होती थी - एक शिशिर अर्थात् पतझड़ की फसल जो अश्विन के महीने में काट ली जाती थी।[8] इसे 'ब्रीहि' ही कहते थे। दूसरे प्रकार का धान हेमंत या जाड़े की फसल होती थी जिसे 'शालि' कहते थे जिसकी पौध श्रावण में लगाई जाती थी और अगहन में काटा जाता था।[9] एक अन्य प्रकार का धान 'निवार' होता था जो एक प्रकार का जंगली चावल था और स्वत: पैदा होता था।

इस काल में 'यव' की खेती होती थी। यह जाड़े के मौसम में बोया जाता था पंचवटी में राम लक्ष्मण के खेत देखते थे। 'गोधूम' के खेतों का वर्णन रामायण में मिलता है। पंचवटी में 'गोधूम' की खेती होती थी।[10]

रामायण काल में 'तिल' की काफी खेती होती थी। 'माष या उड़द' की खेती भी की जाती थी।[11] इस काल में 'इक्षु' अर्थात ईख की खेती की जाती थी। ईख से गुड़ व मदिरा का निर्माण किया जाता था। अंगूर (एक प्रकार का मसाला) शृंगवेर (अदरक), कर्कन्धु (बेर) लाल कचनार के फूल आदि खाद्य पदार्थों का वर्णन रामायण में मिलता है।

कृषि उपकरण -

इस युग में कुठार एवं खनित्र (फावड़ा) का प्रयोग भूमि खोजने के लिए किया जाता था। दात्र का उपयोग फसल काटने के लिए एवं पिटक (टोकरी) का उपयोग सामान रखने के लिए होता था। इसके अलावा क्षुर (घुरा), शूल, टंक (टंकी) का प्रयोग भी होता था।

कृषि में राजकीय सहयोग -

कृषि कार्य में राज्य की ओर से पर्याप्त सहयोग रहा है। राजा के लिए शासन संबंधी आठ विषयों की जानकारी आवश्यक मानी जाती थी जिन्हें अष्टावर्ग कहा जाता था इस अष्टावर्ग में कृषि भी शामिल थी।[12] राज समारोह में राजा द्वारा हल चलाना एक पुण्य कार्य माना जाता था। जनकपुर के राजा जनक ने भूमि की उर्वराशक्ति के लिए स्वयं अपने हाथों से हल चलाया था। चित्रकूट आए भरत से राम का यह पूछा जाना कि हे भरत! गोरक्षा कृषि में लगे हुए वैश्य वर्ग सुख-शांति से तो है? राम की इस उक्ति से यह स्पष्ट होता है कि राजा द्वारा कृषि पर कितना अधिक ध्यान दिया जाता था।

रामायण में हरे वृक्षों के काटने पर प्रतिबंध का भी उल्लेख मिलता है। सुग्रीव के मधुवन का वनपाल दधिमुख अपने सैनिकों के साथ वन की रक्षा करता था और फल तोड़ने की अनुमति किसी को नहीं थी।[13] यह उल्लेख भी मिलता है कि दक्षिण भारत में चंदन वन की रक्षा गन्धर्वों द्वारा की जाती थी।[14]

रामायण काल में भूमि सुधार कार्य -

इस युग में भूमि का कार्य भी प्रमुखता से किया जाता था। भूमि सुधार के लिए 'शोधन' शब्द का प्रयोग हुआ है। सम्भवतः असर भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए उसका उपयोग किया जाता होगा।

निष्कर्ष -

रामायण युग में भी वैदिक काल से चली आ रही कृषि प्रणाली काफी सक्रिय रही है। आधुनिक समय में भी अधिकांश राज्यों के कुछ भागों में रामायण युग के जैसे ही कृषि साधनों का प्रयोग किया जाता है। जैसा कि आधुनिक सरकार कृषि क्षेत्र में सब्सिडी के माध्यम से सहयोग करती हैं वैसे ही रामायण रामायण युग में कृषकों को सम्मान प्राप्त था। रामायण युग में कृषि ही आर्थिक व्यवस्था को मजबूत बनाए हुए थी। अयोध्या नगरवासियों की मूल संपत्ति घर के साथ-साथ कृषि भी थी। अयोध्या की राष्ट्रीय संपत्ति भी कृषि ही थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. विष्णु पुराण, 1. 13, 82
2. रामायण, 2. 61
3. रामायण, 2. 43
4. रामायण, 1. 55, 24
5. रामायण, 2. 110, 28

6. रामायण, 2. 94, 39

7. रामायण, 6. 5, 11

8. रामायण, 4. 30, 53

9. रामायण, 1. 5, 7

10. रामायण, 3. 15, 16

11. रामायण, 7. 91, 20

12. रामायण, 2. 94

13. रामायण, 5-1-63

14. रामायण, 4. 41, 41